DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
GOVT.V.Y.T. PG AUTONOMOUS COLLEGE .DURG CHHATTISGARH
अध्ययन सामग्री निर्माण
डा शकील हुसैन
shakeelvns27@gmail.com
विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महिविद्यालय ।
दुर्ग , छत्तीसगढ़ ।
नैक द्वारा **A+** मूल्यांकित

व्यक्तिवाद

14वीं 15वीं शताब्दी में यूरोप में पुनर्जागरण काल मे चिंतन और गतिविधि का केंद्र आम आदमी को मानने की शुरुआत हुई । यह शुरुआत तार्किक ,वैज्ञानिक और धर्मनिरपेक्ष चिंतन के कारण हुई । इसीलिए व्यक्तिवाद को पुनर्जागरण का परिणाम माना जाता है । क्योंकि 14वीं 15वीं शताब्दी से माननीय बुद्धि ने धर्मिक आस्था का दामन छोड़कर तर्क और विज्ञान के साथ पकड़ा । फलतः आस्थावादी और धर्मवादी सोच का स्थान विज्ञान और तर्क ने ले लिया । मनुष्य की धर्मनिरपेक्ष तार्किक और वैज्ञानिक बुद्धि का मुख्य विद्रोह जीवन के हर पक्ष में दिखाई दिया राजनीति का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं था फलत: ऐसे राजनीतिक दार्शनिकों, चिंतकों की पूरी जमात आई जिन्होंने

- धर्मनिरपेक्ष चिंतन को स्थापित किया
- राज्य को ईश्वर की रचना मानने से इनकार किया
- राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि मानने से इनकार किया
- राज्य सत्ता की वैधता का आधार ईश्वर और धर्म को मानने से इनकार किया
- और इसके स्थान पर राज्य राजा और उसकी सत्ता की वैधता का आधार मनुष्य को मानने पर बल दिया और उसे स्थापित किया ।

यहीं से व्यक्तिवाद की शुरुआत मानी जाती है
अतः व्यक्तिवाद को पुनर्जागरण और धार्मिक सुधार आंदोलनों का परिणाम माना जाता है ।

हाब्स का व्यक्तिवाद

राजनीति में व्यक्तिवाद की प्रथम व्यवस्थित अभिव्यक्ति सर थामस हाब्स की रचना लेवियाथन में होती है । थामस हाब्स को व्यक्तिवाद का जनक माना जाता है । क्योंकि हाब्स ने पहली बार व्यक्ति को राज्य के केंद्र में रखा। हाब्स ने राज्य की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धांत का खंडन किया और एक काल्पनिक समझौते के द्वारा यह बताने की कोशिश की कि राजा के अपरिमित अधिकार वास्तव में व्यक्तियों के अधिकार हैं जो उन्होंने समझौते द्वारा राजा को सौंप दिए हैं । इस प्रकार पहली बार राज्य के निर्माण में व्यक्ति केंद्रीय भूमिका में आ गया । राजनीतिक चिंतन में यह व्यक्तिवाद की औपचारिक शुरुआत है ।

जान लाक का योगदान

हाब्स के बाद के राजनीतिक दार्शनिकों में यह व्यक्तिवादी चिंतन और अधिक पुष्ट और मजबूत हुआ जिस में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान जॉन लॉक का था । जान लाक को उदारवाद का जनक भी माना जाता है । क्योंकि यहां लाक वह पहला दार्शनिक है जिसने कुछ अधिकारों को मौलिक अधिकार घोषित किया ।
जान लाक के अनुसार जीवन संपत्ति और स्वतंत्रता यह तीन अधिकार मनुष्य लेकर के पैदा होता है । अतः यह मनुष्य के प्राकृतिक अधिकार हैं या मौलिक अधिकार है । और राज्य का निर्माण इन्हीं अधिकारों की रक्षा के

लिए हुआ है अतः राज्य लोगों का मालिक नहीं बल्कि नागरिकों का सेवक है जिसका उत्तरदायित्व इन मौलिक अधिकारों की रक्षा करना है ।

जॉन लॉक के समय 1688 में इंग्लैंड में गौरव पूर्ण रक्तहीन क्रांति हुई जिसने संसद की संप्रभुता को स्थापित कर दिया इसी कारण जान लाक को राजनीतिक संप्रभुता का भी जनक माना जाता है । व्यक्तिवाद की स्थापना में जान लाख का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है । जान लाक के बाद व्यक्तिवाद के विकास और पल्लवन में स्पेंसर , बेंथम, मिल आदि का भी अत्यधिक महत्वपूर्ण योगदान है ।

15 मई 16 वीं शताब्दी से लेकर आज तक व्यक्तिवाद उदारवादी चिंतन का आधार बना हुआ है लेकिन प्रारंभिक व्यक्तिवाद से आधुनिक व्यक्तिवाद तक इसमें विकास के कई स्तर आते हैं जिसके आधार पर इसे नकारात्मक व्यक्तिवाद और सकारात्मक व्यक्तिवाद या प्रारंभिक शास्त्रीय व्यक्तिवाद और नया, आधुनिक व्यक्तिवाद या नव व्यक्तिवाद आदि के रूप में भी व्याख्यायित किया जाता है ।

मूल मान्यताएं

1. जीवन
2. सम्पत्ति
3. स्वतंत्रता
4. आर्थिक स्वतंत्रता

1- प्रारम्भिक या शास्त्रीय व्यक्तिवाद

1- प्राथमिक व्यक्ति बात को नकारात्मक व्यक्तिवाद भी कहा जाता है क्योंकि यह व्यक्ति की स्वतंत्रता पर किसी भी प्रकार के प्रतिबंध का विरोध करता है ।

2-हाब्स के चिंतन में यद्यपि व्यक्तिवाद अपने प्रारंभिक रूप में है और हाब्स ने व्यक्ति के सारे अधिकार समझौते द्वारा राजा को सौंप दिए थे क्योंकि वह संसद और राजा के संघर्ष में राजा के साथ था ।

3-लेकिन हाब्स के चिंतन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह पहली बार व्यक्ति के जीवित रहने के अधिकार को सर्वोच्च और सर्वोपरि घोषित करता है ।

4-क्योंकि यदि असीम अधिकारों वाला निस्सीम संप्रभु लेवियाथन व्यक्ति के जीवित रहने के अधिकार पर आक्रमण कर दे तो व्यक्ति को राज्य के प्रति विद्रोह करने का अधिकार है ।

5- यह जीवन के अधिकार की पहली औपचारिक और महान घोषणा थी ।

DR. SHAKEEL HUSAIN

6- जान लाक के राजनीतिक दर्शन में व्यक्तिवाद लगभग अपनी पूर्ण अवस्था को प्राप्त करता है । लॉक ने जीवन संपत्ति को स्वतंत्रता के अधिकार को प्राकृतिक और पवित्र अधिकार घोषित किया ।

7- और यह कहा कि राज्य का जन्म ही इन अधिकारों की रक्षा के लिए हुआ है इसलिए राज्य एक मालिक नहीं बल्कि एक ट्रस्ट या न्यास है तथा यह न्यास तभी तक बना रहता है जब तक वह अपने उद्देश्य अर्थात जीवन संपत्ति और स्वतंत्रता के अधिकारों की रक्षा करता है ।

8- जान लाक के बाद जॉन स्टूअर्ट मिल ने व्यक्तिवाद और और अधिक ऊंचाईयो तक पहुंचाया । मिल का महान कथन है कि " व्यक्ति अपने शरीर और अपनी आत्मा पर संप्रभु है " । इस कथन के द्वारा जॉन स्टूअर्ट मिल के दर्शन व्यक्तिवाद राजनीतिक के साथ-साथ आर्थिक व्यक्तिवादी बन जाता है ।

9- क्योंकि मिलने व्यक्ति के विचार अभिव्यक्ति और उसके कार्य करने की स्वतंत्रता पर राज्य के किसी भी प्रकार के प्रतिबंध का विरोध किया ।

10- कालांतर में व्यक्ति के काम करने अर्थात उसके व्यापार करने और आर्थिक अधिकारों की घोषणा ने पूंजीवाद का मार्ग प्रशस्त किया अतः यूरोप में पूंजीवाद व्यक्तिवाद के साथ-साथ परिपक्व होता है ।

इस प्रकार प्रारंभिक विवाद जीवन संपत्ति और स्वतंत्रता के के इर्द-गिर्द घूमता है और इन तीन अधिकारों को बहुत ही अधिक महत्व दिया जाता है व्यक्ति के आर्थिक अधिकार अर्थात उसके व्यापार करने के अधिकार श्से राज्य को दूर रखा जाता है परिणाम स्वरूप यदभाव्यम् की नीति व्यक्तिवाद और पूंजीवाद दोनों का आधार बन गई जिसे आर्थिक क्षेत्र में एडम स्मिथ ने आगे बढ़ाया और आर्थिक क्षेत्र में व्यक्तिवाद के सबसे बड़े उद्घोषक बने ।

2- आधुनिक, समकालीन या नव व्यक्तिवाद

1. समानता
2. न्याय
3. आर्थिक विषमताओं का समायोजन
4. लोक कल्याण

19वीं शताब्दी तक आते-आते व्यक्तिवाद और पूंजीवाद दोनों के दोष उजागर होने लग गए ।

2- व्यक्ति के कार्यों और विचार पर प्रतिबंध न लगाने की मांग ने एक ऐसी प्रतियोगिता शुरू कर दी जिसमें साधन संपन्न और योग्य लोग बहुत आगे चले गए और साधन विहीन और अपेक्षाकृत कमजोर लोग बहुत पीछे छूट गए ।

3- परिणाम स्वरूप समाज में विषमता है बहुत अधिक बढ़ गई औद्योगिकरण ने समाज में अमीर गरीब की खाई बहुत बड़ा दी । औद्योगिकरण ने एक और नई चीज पैदा की जिसने पूरे विश्व को जहां जोड़ा वहीं शोषण को भी आगे बढ़ाया , वह था उपनिवेशवाद ।

4- औद्योगिकरण के कारण यूरोप में जो अत्यधिक उत्पादन प्रारंभ हुआ उसको बेचने के लिए नए बाजारों की खोज हुई और यूरोप की कीमा शक्तियों ने पूरी दुनिया को अपना उपनिवेश बना लिया ।

5- इन सब कारणों से व्यक्तिवाद के राजनीतिक और आर्थिक सिद्धांत पर पुनर्विचार की आवश्यकता होने लगी क्योंकि गरीब अधिक गरीब हो रहे थे और अमीर अधिक अभी हो रहे थे और व्यक्तिवाद वास्तव में मुट्ठी भर लोगों का विशेषाधिकार बंद करके रह गया था ।

6- ऐसे में यह संभव नहीं था कि राजनीतिक मनीषियों और दार्शनिकों के विचारों को इस प्रकार की समस्याएं प्रभावित ना करें बहुत जल्दी ही व्यक्तिवाद के इन दोषों को दूर करने के लिए राजनीतिक चिंतकों का राजनीतिक चिंतकों का एक पूरा समूह सामने आ गया जिसकी अगुवाई टॉमस हिल ग्रीन ने की ।

7- ग्रीन ने पहली बार इस बात की मांग की कि व्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रकार के प्रतिबंध होने चाहिए उसका महेश मशहूर कथन है कि जिस प्रकार सुंदरता कुरूपता का अभाव नहीं है उसी प्रकार स्वतंत्रता प्रतिबंधों का अभाव नहीं है स्वतंत्रता पर अनुच्छेद प्रकार के प्रतिबंधों की वजह उचित प्रकार के प्रतिबंध होने चाहिए ।

8- अतः व्यक्ति के नैतिक स्वतंत्रता की जिम्मेदारी युवा राज्य को देता है ।

9- और ऐसी बात का आदर्शवादी प्रतिकार प्रारंभ होता है ग्रीन ने जो समस्याएं उठाई और जो तर्क दिए उसने व्यक्तिवाद में सुधार की बजाय आदर्शवाद का नया दर्शन खड़ा कर दिया ।

10- व्यक्तिवाद में सुधार के वास्तविक प्रयास 19वीं शताब्दी के अंत से प्रारंभ हुए और बीसवीं शताब्दी में इस पर काफी विचार हुआ नॉर्मल एंजेल , ग्राम वालास , सी बी मैक्फर्सन और नवीन चिंतकों की पूरी जमात सामने आई जिसने पूंजीवाद और व्यक्तिवाद की आर्थिक - सामाजिक विषमताओं को स्वतत्रंता के साथ समायोजित करने की कोशिश की ।

11- अतः जो व्यक्तिवाद केवल स्वतंत्रता की बात करता था अब अब उसके साथ समानता और न्याय की भी बात की जाने लगी ,और यह कहा जाने लगा कि समानता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है ।

12- अतः स्वतंत्रता और समानता परस्पर पूरक बन गए । ।
13- लेकिन स्वता समानता का मूल विचार ही स्वतंत्रता के विरुद्ध जाता था अतः समानता और स्वतंत्रता में संतुलन बिठाने की कोशिश की गई और यह संतुलन न्याय के माध्यम से बिठाया गया ।

14- न्याय की क्या विचार यद्यपि बहुत पुराना था किंतु इसकी आधुनिक व्यक्तिवादी व्याख्या की गई जिसमें सीबी में फरसन जॉन रॉल्स वाल्जर आदि के नाम प्रमुख है ।

15- इन्होंने यह बताने की कोशिश की कि समाज को बेशक नया पूर्ण होना चाहिए लेकिन न्याय का अर्थ व्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध नहीं है ।

16- जान राल्स ने यह बताने का प्रयत्न किया कि एक प्रतियोगी राज्य में आर्थिक विषमता स्वाभाविक हैं किंतु इन आर्थिक विषमताओं के बाद भी समाज न्याय पूर्ण हो सकता है यदि इन आर्थिक विषमताओं से समाज के अधिकांश लोगों को लाभ हो ।

निष्कर्ष

इस प्रकार समकालीन व्यक्तिवाद या नव व्यक्तिवाद व्यक्ति के राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता के साथ समानता और न्याय को समायोजित करने का प्रयत्न करता है । और आर्थिक विषमताओं को न्यूनतम करके समाज को न्यायपूर्ण बनाने का प्रयत्न करता है । इस प्रकार समकालीन व्यक्तिवाद वैयक्तिक अधिकारों और समाज की अपेक्षाओं दोनों में संतुलन बिठाने का प्रश्न करता है । यह आर्थिक विषमताओं को न्याय पूर्ण बनाकर व्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करता है अतः समकालीन व्यक्तिवाद स्वतंत्रता के साथ समानता और न्याय की अवधारणाओं के साथ चलता है ।

गृह कार्य

1- व्यक्तिवाद के प्रमुख मूल्य बताइए ।

2- नकारात्मक और सकारात्मक व्यक्तिवाद की समीक्षा कीजिए ।

3- व्यक्तिवाद के विकास में थॉमस हॉब्स और जान लाक के योगदान की समीक्षा कीजिए

संदर्भ :

आशिर्वादम **(1979) :** राजनीति विज्ञान , एस चन्द एण्ड कम्पनी नई दिल्ली ।

पंत, जैन, गोपाल **(1986) :** राजनीतिक सिद्धान्त , सेंट्रल पब्लिशिंग हाउस इलाहाबाद उत्तर प्रदेश ।

https://www.encyclopedia.com/history/united-states-and-canada/us-history/individualism

Dr. SHAKEEL HUSAIN